राजदेव सिंह
निदेशक
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
जलविज्ञान भवन
रूड़की – 247 667

निदेशक की कलम से.....

प्रसन्नता का विषय है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की विगत 19–20 वर्षों से प्रकाशित की जा रही अपनी वार्षिक हिंदी पत्रिका **"प्रवाहिनी"** के 20वें अंक का प्रकाशन हिंदी दिवस के पावन अवसर पर करने जा रहा है। यद्यपि हिंदी मास के दौरान संस्थान में हिंदी के प्रचार–प्रसार एवं प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के दृष्टिकोण से अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं तथापि हिंदी पत्रिका का प्रकाशन अपने आप में एक विशिष्ट कार्य है।

इस पत्रिका में वैज्ञानिक, तकनीकी, साहित्यिक एवं अन्य विधाओं से जुड़े लेखों के समावेश से सभी अधिकारियों व कर्मचारियों की हिंदी लेखन रूचि में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है और वे अपने सामान्य प्रकृति के कार्यों के साथ–साथ तकनीकी कार्यों में भी राजभाषा हिंदी का प्रयोग कर रहे हैं। राजभाषा हिंदी के विकास की दिशा में यह एक शुभ संकेत है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था **"वह देश गूंगा है जिसकी अपनी भाषा नहीं"**। भाषा विचारों के आदान–प्रदान का एक सशक्त माध्यम है और यह राष्ट्रीय गौरव एवं अस्मिता का प्रतीक भी है। भारतीय संविधान सभा ने हिंदी को राजभाषा का दर्जा इसी तथ्य को ध्यान में रखकर दिया था कि हिंदी देश के एक बड़े भू–भाग में बोली व समझी जाती है और यह सरल, सुबोध व सहज भाषा है। हिंदी राष्ट्रीय एकता, संस्कृति और जन सम्पर्क का सर्वोत्तम सूत्र है। इस विशाल देश को एकता के सूत्र में बांधने में भी हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति में उसकी भाषा और संस्कृति का विशेष योगदान होता है। वैसे तो देश में भाषाएं कई होती हैं परंतु उनमें एक भाषा ऐसी होती है जिसे अधिकतर लोग बोल व समझ सकते हैं। हिंदी एक ऐसी ही भाषा है जो भारत में पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण से लेकर विदेशों तक में बोली व समझी जाती है। मैं इस पत्रिका के माध्यम से सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आग्रह करना चाहूंगा कि वे राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार एवं कार्यान्वयन में बढ़–चढ़कर प्रतिभाग करें।

संस्थान का यह प्रयास रहा है कि **"प्रवाहिनी"** पत्रिका में संकलित किए जाने वाले लेखों को भाषा और साहित्य संबंधी विषयों तक ही सीमित न रखा जाए बल्कि इसमें तकनीकी एवं वैज्ञानिक विधाओं से संबंधित विद्वानों के आधुनिक ज्ञान संबंधी लेखों को भी शामिल किया जाए। **"प्रवाहिनी"** के प्रस्तुत अंक में भिन्न–भिन्न विषयों के लेखों को संकलित किया गया है।

"प्रवाहिनी" के इस अंक में संस्थान के पदाधिकारियों तथा उनके परिवारजनों के अलावा संस्थानेत्तर व्यक्तियों के ज्ञानवर्धक, रोचक एवं महत्वपूर्ण लेखों को शाामिल किया गया है। भाषा सरल तथा सहज रखने का प्रयास किया गया है। मुझे विश्वास है कि यह अंक समस्त सुधी पाठकों के लिए रोचक तथा उपयोगी सिद्ध होगा।

मैं **"प्रवाहिनी"** के इस अंक के संपादन, टंकण, प्रूफ रीडिंग एवं प्रकाशन कार्यों से जुड़े पदाधिकारियों तथा विद्वत लेखकों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं। मैं पत्रिका की अपार सफलता की मंगल कामना करता हूं।

(राजदेव सिंह)